P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

राँची महानगर में मलिन बस्तियाँ : एक भौगोलिक अध्ययन

रोहित कुमार चौबे
शोध छात्र,
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड, भारत

सारांश

औद्योगीकरण व नगरीकरण जहाँ समाज को उच्च स्तर की ओर ले जा रहे है, वहीं इसके साथ एक गंभीर समस्या के रूप में मलिन बस्तियों का अभ्युदय जुड़ा हुआ है। नगरों में रोजगार की संभावना व आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता ने ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया है, फलतः नगरों में बढ़ती जनसंख्या ने मलिन बस्तियों (स्लम) को जन्म दिया है, यही स्थिति राँची महानगर की है, राजधानी बनने के बाद से वर्त्तमान समय तक यहाँ चलने वाले आर्थिक गतिविधियों ने लोगों की दूर–दराज से अपनी ओर आकृष्ट किया है, जिस कारण यहाँ मलिन बस्तियाँ विकसित होती चली गई। ऐसी बस्तियाँ कई एक प्रकार की समस्याओं जैसेः– पेय जल, बिजली, भोजन, उपयुक्त आवास, सड़क, अशिक्षा आदि जैसे अनेक गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। ऐसी बस्तियों को समाज के वर्त्तमान स्तर तक लाने हेतु भागीरथ प्रयास की आवश्यकता परिलक्षित हो रही है तथा समाज में उपयुक्त स्थान व सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित कराने हेतु सरकारी व गैर–सरकारी दोनों ही स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : मलिन बस्तियाँ, समस्या, स्लम, राँची।

प्रस्तावना

अव्यवस्थित तौर पर विकसित एवं सामान्यतः उपेक्षित ऐसा क्षेत्र 'मलिन बस्ति' (स्लम) कहलाता है, जो अत्यधिक प्रदूषित एवं अत्यधिक घना बसा हो तथा जहाँ के मकान मरम्मत के बिना जीर्ण–शीर्ण अवस्था में पाए जाते है। ''स्लम गिरावट की एक चरमावस्था है, जिसमें आवास इतने अधिक अनुपयुक्त हो जाते है कि वे समाज के स्वास्थ्य एवं नैतिक मूल्यों के लिए खतरा उत्पन्न करने लगते है।''[2] 2011, की जनगणना के अनुसार राँची महानगर की कुल जनसंख्या 1073427 है जिसमें से 232048 जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करती है। शोधकर्त्ता द्वारा राँची नगर निगम से प्राप्त सूचना के अनुसार राँची में कुल 254 मलिन बस्तियाँ 55 वार्डों के अंतगर्त चिन्हित की गई है। राँची नगर निगम के अनुसार मलिन बस्तियाँ वे हैं जोः–

1. सघन रूप से बसे हो
2. घरों की संख्या 20 से अधिक हो
3. आधारभूत सुविधाओं का अभाव हो

साहित्यावलोकन :–

कुमार, जि. द्वारा लिखित शोध पत्र 'स्लम इन इंडिया : ए फोकस ऑन मेट्रोपोलिटन सिटीज' (Slum in India : A Focus on Metropolitan Cities) जिसका प्रकाशन 2014 में हुआ।

फरहाना, एम. खा. एवं मननान, अ. का. द्वारा लिखित शोध पत्र 'सोशियो इकोनोमिक इंपेक्ट ऑफ रिजनल रूरल अर्बन माइग्रेशन : ए रिभिजिट ऑफ स्लम डयूलर्स ऑफ राजशाही सिटी कारपॉरेशन' (Socio economic impact of regional rural urban migration : A revisit of slum dwellers of rajshahi city corporation) जिसका प्रकाशन 2018 में हुआ।

हर्षवर्धन, रा. एवं त्रिपाठी, वी. के. द्वारा लिखित शोध पत्र 'अर्बनाइजेशन एंड ग्रोथ आफ स्लम पॉपुलेशन इन झारखण्ड : ए स्पेशियल एनालसिस' (Urbanisation and growth of Slum population in Jharkhand : A Spatial Analysis) जिसका प्रकाशन 2015 में हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का प्रथम उद्देश्य राँची महानगर में मलिन बस्तियों से जुड़ी समस्याओं को जानना है जिससे यह ज्ञात हो सके कि मलिन बस्तियों की स्थिति कैसी है एवं द्वितीय उद्देश्य मलिन बस्तियों के निवासियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र झारखण्ड राज्य के राँची जिला का राँची महानगर है। यह 23° 14′ उ. – 23° 25′ उ. अक्षांश एवं 85° 15′ पू. – 85° 25′ पू. देशांतर के मध्य अवस्थित है। समुद्र तल से औसत ऊँचाई 629 मी. है एवं क्षेत्रफल 173 वर्ग कि.मी. है। 2011, की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 1073427 एवं साक्षरता दर 87.37% है। यहाँ कुल 55 वार्ड है।

Fig : 1
Location Map

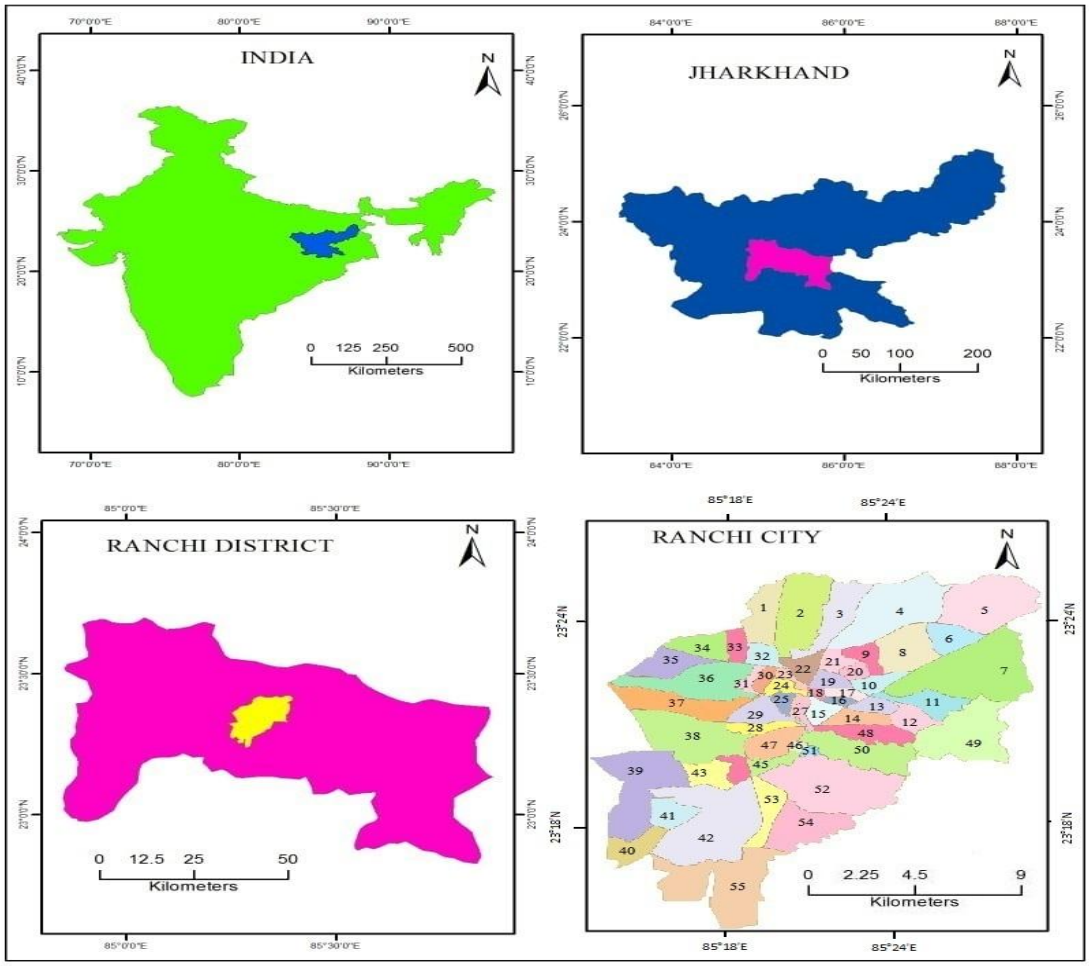

Source :- Prepared by Author

विधि तंत्र

शोध विधितंत्र का तात्पर्य क्रमबद्ध रूप से शोध लक्ष्य की प्राप्ति की प्रविधि से है। प्रस्तुत शोध पत्र हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़े प्रयुक्त किए गए हैं। प्राथमिक आँकड़ो की प्राप्ति हेतु संदर्श सर्वेक्षण किया गया जिसमें 3 मलिन बस्तियों को सम्मिलित किया गया साथ ही निरीक्षण, साक्षात्कार एवं अनुसूची विधि का प्रयोग प्रदत्त संग्रह के लिए किया गया। द्वितीयक आँकड़े नगर निगम, इंटरनेट एवं संबंधित पुस्तक व पत्रिका से संकलित किए गए है। इस शोध पत्र में विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक विधितंत्रों का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण

शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श सर्वेक्षण द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि आधारभूत सुविधाओं के मामले में मलिन बस्तियों की क्या स्थिति है, तथा प्राप्त परिणाम को तालिकाबद्ध रूप से तालिका–1 में प्रदर्शित किया गया। तालिका–1 से ज्ञात होता है कि प्रतिदर्श में सम्मिलित तीनों ही स्लमों में पेयजल की उपलब्धता रांची नगर निगम द्वारा सुनिश्चित की जाती है, कुछ घरों में हैंडपम्प का भी प्रयोग जलापूर्ति हेतु होता है। 50% से भी कम प्रतिदर्श घरों में शौचालय की उपलब्धता मिलती है, जो इस बात को रेखांकित करते हैं कि यहाँ लोग सार्वजनिक शौचालय या खुले में शौच करते हैं। लगभग सभी घरों में बिजली की उपलब्धता देखी गई है, घरों की बनावट ज्यादातर एक मंजिला है पक्का घर व एस्बेस्टस घर ज्यादा देखे गए, स्लम अनाधिकृत भूमि को घेरे हुए हैं, जिस कारण से घर एस्बेस्टस से बनाए जाते हैं। प्रतिदर्श घरों में जल निकासी की व्यवस्था निम्न से सामान्य है,

लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अभाव मिलता है, खुली नालियाँ जिसमें बरसात के दिनों मे जल जमाव आसानी से देखा जा सकता है। स्वास्थ्यता की दृष्टि से प्रतिदर्श मलिन बस्तियों की स्थिति निम्न से सामान्य की ओर है, वर्षा के दिनों में यहाँ बीमारियों का प्रकोप ज्यादा रहता है।

तालिका – 1

प्रतिदर्श घरों में आधारभूत सुविधाएँ

प्रतिदर्श मलिन बस्ती	प्रतिदर्श घरों की संख्या	प्रतिदर्श घरों में पेयजल की उपलब्धता				प्रतिदर्श घरों में शौचालय की उपलब्धता	प्रतिदर्श घरों में बिजली की उपलब्धता	प्रतिदर्श घरों की संरचना				प्रतिदर्श घरों में जल निकास की व्यवस्था			प्रतिदर्श घरों में स्वास्थ्य सुविधा की स्थिति		
		कुआँ	हैंड पंप	नगर निगम	अन्य			पक्का	खप–रैल	एस्बेस्टस	अन्य	उच्च	सामान्य	निम्न	उच्च	सामान्य	निम्न
करमटोली	20	.	04	14	02	06	20	12	01	07	.	.	13	07	.	13	04
कडरू	20	.	07	10	03	04	18	08	05	07	.	.	04	16	.	12	08
किशोरगंज	20	.	03	17	.	12	20	05	06	09	.	.	15	05	.	17	03

स्रोत : क्षेत्र सर्वेक्षण (अनुसूची विधि द्वारा)

परिणाम व चर्चा

झारखण्ड राज्य की राजधानी बनने के बाद राँची में तीव्रता से बढ़ते नगरीकरण की प्रक्रिया ने रोजगार के अवसर खोले परिणामतः राँची अपने आस–पास के क्षेत्रों के लिए 'अपकर्षण कारक' (Pull Factor) के रूप में कार्य करने लगा तथा आव्रजकों ने मलिन बस्तियों को जन्म दिया। वर्त्तमान में राँची महानागर में कुल 254 मलिन बस्तियाँ है, जिनमें सबसे अधिक आबादी वाला मलिन बस्ती पुनदाग स्लम (6285) है, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर क्रमशः मोसी बाड़ी स्लम (5816) एवं हिंद पीड़ी स्लम (5641) है।

मलिन बस्तियों से जुड़ी हुई समस्याओं को जानने हेतु शोधकर्त्ता द्वारा संदर्श सर्वेक्षण किया गया तथा प्राप्त परिणाम को निम्नवत विश्लेषित किया गया :–

मलिन बस्तियों की सामाजिक स्थिति

आवासीय संरचना

संदर्श मलिन बस्ति करम टोली में अनाधिकृत भूमि पर लोगों का बसाव है, कडरू मलिन बस्ती रेलवे लाइन के सहारे अवस्थित है, जो एक अवैध बसाव है, यही स्थिति किशोरगंज स्लम की भी है। तीनों मलिन बस्तियों में कुछ ही घर ऐसे है, जिनके पास अपनी ज़मीन है, एवं इसका औसत करम टोली में तुलनात्मक रूप से अधिक है, आवासीय किराया वाले भी मकान देखे गए जिनका सर्वाधिक प्रतिशत कडरू स्लम में देखा गया अधिकतर घर में औसतन 5–6 लोगों का निवास है, परंतु कमरों की संख्या 2–3 है। रसोईघर एवं निजी शौचालय की उपलब्धता तीनों स्लमों में 1–3% के बीच है। साक्षात्कार के दौरान कडरू स्लम की निवासी संतोषी ने बताया कि :– ''स्नानागार एवं शौचालय के अभाव में उन्हें खुले में नहाना एवं शौच करना पड़ता है, ऐसा करने के लिए वे विवश है, क्योंकि दूसरा कोई विकल्प नहीं है।'' मकानों की स्थिति काफी दयनीय है, कच्चा घर सबसे अधिक है, कई मकान बिना रोशनदानी वाले पाए गए, ऐसा स्थिति तीनों ही स्लमों की है।

बिजली, जलापूर्ति व जल निकासी

तीनों ही मलिन बस्तियों में बिजली की स्थिति चिंताजनक है, कुछ ही घरों में बिजली का उपभोग विद्युत विभाग से पंजीयन करा कर किया जा रहा है, तथापि वहीं अधिकांश घर ऐसे है, जो चोरी से बिजली का उपभोग कर रहे है, जलापूर्ति एक जटिल समस्या है, जिसका विकराल रूप गर्मी के दिनों में परिलक्षित होता है, जलापूर्ति कुँओं, हैंडपंपों द्वारा होती है, तथा कुछ क्षेत्रों में नगर निगम द्वारा भी जलापूर्ति की जाती है, नगर निगम द्वारा उचित गुणवत्ता वाले जल की पूर्ति न कराना एक अन्य समस्या है। स्लमों में जल निकास की उचित व्यवस्था का अभाव है, नालियाँ खुली व गंदी अवस्था में देखी गई है, वर्षा के दिनों में नालियों में जल जमाव एक साधारण बात है।

स्वास्थ्य सुविधा

सर्वविदित है कि मलिन बस्तियाँ अपने स्वास्थ्य सुविधाओं की उपेक्षा के लिए जानी जाती है, अर्थात् स्लम निवासियों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता नगण्य होती है, तथापि राँची महानगर की मलिन बस्तियाँ इसका अपवाद नहीं है। दूषित जल व मच्छरों से होने वाली बीमारियाँ यहाँ देखी जा सकती है, खुले में शौच, शौच के बाद हाथ सही से साफ़ न करना व बर्तनों को राख से धोना आदि जैसी गतिविधियाँ यहाँ देखी गई है। प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों की अनुपस्थिति होने के कारण इन्हें दूर–दराज वाले चिकित्सा केन्द्रों का सहारा लेना पड़ता है जहाँ इलाज निःशुल्क हो।

शिक्षा

शिक्षा स्वयं को तलाशने एवं तराशने का मौका देती है। तीनों ही स्लमों में उचित शिक्षा व्यवस्था की कमी देखी गई है, कुछ बच्चों का नामांकन तो हुआ है, परंतु वे ड्रापआउट का शिकार है, तो कुछ नामांकन के बाद सिर्फ सरकारी चेकिंग के दौरान ही विद्यालय जाते है। स्लम के बच्चों का एक बड़ा समूह शिक्षा से वंचित छोटे–छोटे आर्थिक क्रियाकलापों में संलग्न है। इसका एक बड़ा कारण माता–पिता का अपने बच्चों के शिक्षा के प्रति उदासीन भाव है।

मलिन बस्तियों की आर्थिक स्थिति

कुल 254 मलिन बस्तियों में 47643 आवास है, जिनमें से 45595 आवास गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों है। करम टोली स्लम में 557 घरें है तथा सभी घरें बी. पी. एल. परिवार वाले है, वहीं कडरू स्लम में 144 घरों में से 139 घरे तथा किशोरगंज स्लम में संपूर्ण घरें (56) बी. पी. एल. परिवार वाले है। करम टोली में रहने वाले अधिकांश पुरुष कूड़ा–करकट साफ करने जैसे कार्य में संलग्न है, तो वहीं कडरू स्लम में स्वीपिंग कार्य वाले लोगों की बहुलता है, किशोरगंज स्लम में अधिकतर रिक्शा चालक के रूप में कार्य करने वाले लोग है, अर्थात् ऐसे मलिन बस्तियों में निम्न वर्गीय आर्थिक क्रियाकलाप वाले लोग होते है।

Table : - 2

Basic Services to the Slum

Services	Remarks
Water Supply	3% of the total slum
Toilets	11% of the total slum
Sever System	None
Primary Education	37% of the total slum
Health care facility	9% of the total slum
Solid waste Management	None

Source :- Ranchi Municipal Corporation

सुझाव

1. 'इंदिरा आवास योजना' को सफल बनाने का भागीरथ प्रयास किया जाए, ताकि लोगों को रहने हेतु उचित आवास की कमी न हो।
2. स्लम के सभी घरों को 'वाटर कनेक्शन' से जोड़ा जाए, ताकि पेय जल की समस्या समाप्त हो, जलनिकासी की उचित व्यवस्था की ओर ध्यान दिया जाए, बंद ढक्कन वाली नालियाँ, नालियों की उचित साफ–सफाई इस दिशा में कारगर साबित होगें।
3. प्रत्येक स्लम में स्वास्थ्य केन्द्र की व्यवस्था की जाए, लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का अभियान 'नुक्कड़ नाटक' के माध्यम से चलाया जाए।
4. लोगों के आर्थिक दशा में सुधार लाने हेतु ऐसे बस्तियों के पुरुष व महिला दोनों के बीच लघु कुटीर उद्योग को लोकप्रिय बनाया जाए, मनरेगा योजना से इन्हें जोड़ा जाए तथा कार्य दिवसों की संख्या बढ़ाया जाए ताकि इन्हें ऐसी योजनाओं का भरपूर लाभ मिलें।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, जैसे–जैसे नगरीकरण की प्रक्रिया बढ़ती है, ठीक उसी रफ़्तार में मलिन बस्तियों की संख्या भी बढ़ती है। राँची की मलिन बस्तियाँ सामाजिक–आर्थिक रूप में काफी पिछड़ी हुई है, यहाँ जीवन जीने के लिए आधारभूत सुविधाएँ तक उपलब्ध नहीं है, पेय जल, आवास, बिजली, स्वास्थ्य सुविधा आदि का अभाव एक जटिल समस्या है। स्लमों में निवास करने वाले लोगों के प्रति अपने विचार को बदलते हुए उन्हें समाज के वर्त्तमान स्तर से जोड़ने का पूरा–पूरा प्रयास करना चाहिए, जब तक हम अपनी मानसिकता को ऊपर नहीं उठाएँगें, स्लम ऊपर नहीं उठ सकता।

आभार कथन

शोधकर्त्ता उन सब के प्रति आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने इस शोध पत्र को पूरा करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। शोधकर्त्ता विशेष रूप से राँची नगर निगम के पदाधिकारियों, कर्मचारियों एवं संदर्श सर्वेक्षण में सम्मिलित मलिन बस्तियों के निवासियों के प्रति आभार व्यक्त करता है।

अंत टिप्पणी

1. *कुमार, र. (2017), शोध कार्यप्रणाली, सेग पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।*
2. *डॉ. तिवारी, आर. सी. (2010), अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 307*
3. *डॉ. बंसल, सु. च. (2014), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।*
4. *सुलेमान, मु. (2011), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, जेनरल बुक एजेंसी, पटना।*
5. *Siddhartha, K. (2002), cities urbanisation and urban system, kisalaya publication Pvt. Ltd. New Delhi*
6. *http://www.ranchimunicipal.com*